

## यादगार कायम करने की विधि

अव्यक्त स्थिति ही मुख्य सब्जेक्ट है। व्यक्त में रहते कर्म करते भी अव्यक्त स्थिति रहे। इस सब्जेक्ट में ही पास होना है। अपने बुद्धि की लाइन को क्लीयर रखना है। जब रास्ता क्लीयर होता है तो जल्दी-जल्दी दौड़कर मंजिल पर पहुँचना होता है। पुरुषार्थ की लाइन में कोई रूकावट हो तो उसको मिटाकर लाइन क्लीयर करना – इस साधन से ही अव्यक्त स्थिति की प्राप्ति होती है। मधुबन में आकर कोई-न-कोई विशेष गुण सभी को देना यही यादगार है। वह तो हो गया जड़ यादगार। लेकिन यह अपने गुण की याद देना, यह है चैतन्य यादगार। जो सदैव याद करते रहते। कभी कहीं पर जाओ तो यही लक्ष्य रखना है कि जहाँ जायें वहाँ यादगार कायम करें। यहाँ से विशेष स्नेह अपने में भर के जायेंगे तो स्नेह पत्थर को भी पानी कर देगा। यह आत्मिक स्नेह की सौगात साथ ले जाना, जिससे किसी पर भी विजय हो सकती है। समय ज्यादा समझते हो वा कम? तो अब कम समय में 100 परसेन्ट तक पहुँचने की कोशिश करनी है। जितनी भी अपनी हिम्मत है वह पूरी लगानी है। एक सेकेण्ड भी व्यर्थ न जाए इतना ध्यान रखना है। संगम का एक सेकेण्ड कितना बड़ा है। अपने समय और संकल्प दोनों को सफल करना है। जो कार्य बड़े न कर सकें वह छोटे कर सकते हैं। अभी तो वह कार्य भी रहा हुआ है। अब तक जो दौड़ी लगाई वह तो हुई लेकिन अब जम्प देना है तब लक्ष्य को पा सकेंगे। सेकेण्ड में बहुत बातों को परिवर्तन करना – यह है जम्प मारना। इतनी हिम्मत है? जो कुछ सुना है उनको जीवन में लाकर दिखाना है। जिसके साथ स्नेह रखा जाता है, उन जैसा बनने का होता है। तो जो भी बापदादा के गुण हैं वह खुद में धारण करना, यही स्नेह का फर्ज है। जो बाप की श्रेष्ठता है उसको अपने में धारण करना है। यह है स्नेह। एक भी विशेषता में कमी न रहे। जब सर्व गुण अपने में धारण करेंगे तब भविष्य में सर्वगुण सम्पन्न देवता बनेंगे। यही लक्ष्य रखना है कि सर्व गुण सम्पन्न बने। बाप के गुण सामने रख अपने को चेक करो कि कहाँ तक हैं। कम परसेन्टेज भी न हो। परसेन्टेज भी सम्पूर्ण हो तब वहाँ भी सम्बन्ध में नजदीक आ सकेंगे।

अब रूह को ही देखना है। जिस्म को बहुत देख-देख कर थक गये हो। इसलिए अब रूह को ही देखना है। जिस्म को देखने से क्या मिला? दुःखी ही बने। अब रूह-रूह को देखता है तो राहत मिलती है। शूरवीर हो ना! शूरवीर की निशानी क्या होती है? उनको कोई भी बात में पार करना मुश्किल नहीं लगता है और समय भी नहीं लगता है। उनका समय सिवाय सर्विस के अपने विघ्नों आदि को हटाने में नहीं जाता है। इसको कहा जाता है शूरवीर। अपना समय अपने विघ्नों में नहीं, लेकिन सर्विस में लगाना चाहिए। अब तो समय बहुत आगे बढ़ गया है। इस हिसाब से अब तक वह बातें बचपन की हैं। छोटे बच्चे नाजुक होते हैं। बड़े बहादुर होते हैं। तो पुरुषार्थ में बचपना न हो। ऐसा बहादुर होना चाहिए। कैसी भी परिस्थिति हो, क्या भी हो, वायुमण्डल कैसा भी हो। लेकिन कमजोर न बनें, इसको शूरवीर कहा जाता है। शारीरिक कमजोरी होती है तो भी असर हो जाता है – मौसम, वायु आदि का। तन्दुरुस्त को असर नहीं होता है। तो यह भी वायुमण्डल का असर नाजुक को होता है। वायुमण्डल कोई रचयिता नहीं है। वह तो रचना है। रचयिता ऊँचा व रचना? (रचयिता) तो फिर

रचयिता रचना के अधीन क्यों? अब शूरवीर बनने का अपना स्मृति दिवस याद रखना। यह स्मृति भूलना नहीं। ऐसा नक्शा बनकर जाओ जो आपके नक्शे में बाप को देखे। अपने को सम्पूर्णता का नक्शा दिखाना है। हिम्मत है तो मदद जरूर मिल जायेगी। अब यह समझते हो कि यहाँ आकर ढीलेपन में तेजी आई है? अभी पुरुषार्थ में ढीले नहीं बनना है। सम्पूर्ण हक लेने के लिए सम्पूर्ण आहुती भी देनी है। कोई भी यज्ञ रचा जाता है तो वह सम्पूर्ण सफल कैसे होता है? जबकि आहुति डाली जाती है। अगर आहुति कम होगी तो यज्ञ सफल नहीं हो सकता। यहाँ भी हरेक को यह देखना है कि आहुति डाली है? ज़रा भी आहुति की कमी रह गयी तो सम्पूर्ण सफलता नहीं होगी। जितना और उतना का हिसाब है। हिसाब करने में धर्मराज भी है। उनसे कोई भी हिसाब रह नहीं सकता। इसलिए जो भी कुछ आहुति में देना है वह सम्पूर्ण देना है और फिर सम्पूर्ण लेना है। देने में सम्पूर्णता नहीं तो लेने में भी नहीं होगी। जितना देंगे उतना ही लेंगे। जब मालूम भी पड़ गया कि सफलता किसमें है फिर भी सफल न करेंगे तो क्या होगा? कमी रह जायेगी इसलिए सदैव ध्यान रखो कि कहाँ कुछ रह तो नहीं गया। मन्सा में, वाणी में, कर्म में कहाँ भी कुछ रहना नहीं चाहिए। कोई भी कार्य का जब समाप्ति का दिन होता है तो उस समय चारों ओर देखा जाता है कि कुछ रह तो नहीं गया। वैसे अभी भी समाप्ति का समय है। अगर कुछ रह गया तो वह रह ही जायेगा। फिर स्वीकार नहीं हो सकता। इसको सम्पूर्ण आहुती भी नहीं कहा जायेगा, इसलिए इतना ध्यान रखना है। अभी कमी रखने का समय बीत चुका। अब समय बहुत तेज आ रहा है। अगर समय तेज चला गया और खुद ढीले रह गये तो फिर क्या होगा? मंजिल पर पहुँच सकेंगे? फिर सतयुगी मंजिल के बजाए त्रेता में जाना पड़ेगा। जैसे समय तेज दौड़ रहा है वैसे खुद को भी दौड़ना है। स्थूल में भी जब कोई गाड़ी पकड़नी होती है तो समय को देखना पड़ता है। नहीं तो रह जाते हैं। समय तो चल ही रहा है। कोई के लिए समय को रूकना नहीं है। अब ढीले चलने के दिन गये। दौड़ी के भी दिन गये। अब है जम्प लगाने के दिन। कोई भी बात की कमी फील होती है तो उसको एक सेकेण्ड में परिवर्तन में लाना इसको कहा जाता है जम्प। देखने में ऊँचा आता हैं लेकिन है बहुत सहज। सिर्फ निश्चय और हिम्मत चाहिए। निश्चय वालों की विजय तो कल्प पहले भी हुई थी वह अभी भी हुई पड़ी है। इतना पक्का अपने को बनाना है। सेकेण्ड सेकेण्ड मन, वाणी और कर्म को देखना है। बापदादा को यह देखना कोई मुश्किल नहीं। देखने के लिए अब कोई आधार लेने की अवश्यकता नहीं है। कहाँ से भी देख सकते हैं। पुरानों से नये में और ही उमंग होता है कि हम कर के दिखायेंगे। ऐसे तीव्र स्टुडेन्ट्स भी हैं। नये ही कमाल कर सकते हैं क्योंकि उन्हीं को समय भी स्पष्ट देखने में आ रहा है। समय का भी सहयोग है, परिस्थितियों का भी सहयोग है। परिस्थितियाँ भी अब दिखला रही हैं कि पुरुषार्थ कैसा करना है। जब परीक्षाये शुरू हो गयी तो फिर पुरुषार्थ नहीं कर सकेंगे। फिर फाइनल पेपर शुरू हो जायेगा। पेपर के पहले पहुँच गये हो, यह भी अपना सौभाग्य समझना जो ठीक समय पर पहुँच गये हो। पेपर देने के लिए दाखिल हो सके हो। पेपर शुरू हो जाता है फिर गेट बन्द हो जाता है। शुरू में जो आये उन्हीं को वैराग्य दिलाया जाता था। आजकल की परिस्थितियाँ ही वैराग्य दिलाती हैं। आप लोग की धरनी बनने में देरी नहीं है। सिर्फ ज्ञान के निश्चय का पक्का बीज डालेंगे और फल तैयार हो जायेगा। यह ऐसा बीज है जो बहुत जल्दी फल दे सकता है। बीज पावरफुल है। बाकी पालना करना, देखभाल

करना आप का काम है। बाप सर्वशक्तिमान और बच्चों को संकल्पों को रोकने की भी शक्ति नहीं! बाप सृष्टि को बदलते हैं, बच्चे अपने को भी नहीं बदल सकते! यही सोचो कि बाप क्या है और हम क्या है? तो अपने ऊपर खुद ही शर्म आयेगा। अपनी चलन को परिवर्तन में लाना है। वाणी से इतना नहीं समझेंगे। परिवर्तन देख खुद ही पूछेंगे कि आप को ऐसा बनाने वाला कौन? कोई बदलकर दिखाता है तो न चाहते हुए भी उनसे पूछते हैं क्या हुआ, कैसे किया, तो आप की भी चलन को देख खुद खींचेंगे।

यह तो निमित्त सेवाकेन्द्र हैं। मुख्य केन्द्र तो सभी का एक ही है। ऐसे बेहद की दृष्टि में रहते हो ना। मुख्य केन्द्र से ही सभी का कनेक्शन है। सभी आत्माओं का उनसे कनेक्शन है, सम्बन्ध है। एक से सम्बन्ध रहता है तो अवस्था भी एकरस रहती है। अगर और कहाँ सम्बन्ध की रग जाती है तो एकरस अवस्था नहीं रहेगी। तो एकरस अवस्था बनाने के लिए सिवाए एक के और कुछ भी देखते हुए न देखो। यह जो कुछ देखते हो वह कोई वस्तु रहने वाली नहीं है। साथ रहने वाली अविनाशी वस्तु वह एक बाप ही है। एक की ही याद में सर्व प्राप्ति हो सकती है और सर्व की याद से कुछ भी प्राप्ति न हो, तो कौन-सा सौदा अच्छा? देखभाल कर सौदा किया जाता है या कहने पर किया जाता है? यह भी समझ मिली है कि यह माया सदैव के लिए विदाई लेने थोड़ा समय मुखड़ा दिखलाती है। अब विदाई लेने आती है, हार खिलाने नहीं। छुट्टी लेने आती है। अगर घबराहट आई तो वह कमजोरी कही जायेगी। कमजोरी से फिर माया का वार होता है। अब तो शक्ति मिली है ना। सर्वशक्तिवान के साथ सम्बन्ध है तो उनकी शक्ति के आगे माया की शक्ति क्या है? सर्वशक्तिवान के बच्चे हैं, यह नशा नहीं भूलना। भूलने से ही फिर माया वार करती है। बेहोश नहीं होना है। होशियार जो होते हैं, वह होश रखते हैं। आजकल डाकू लोग भी कोई-कोई चीज से बेहोश कर देते हैं। तो माया भी ऐसा करती है। जो चतुर होते हैं वह पहले से ही जान लेते कि इनका यह तरीका है इसलिए पहले से ही सावधान रहते हैं। अपने होश को गंवाते नहीं हैं। इस संजीवनी बूटी को सदैव साथ रखना है। भल एक मास से आये हैं। यह भी बहुत है। एक सेकेण्ड में भी परिवर्तन आ सकता है। ऐसे नहीं समझना कि हम तो अभी आये हैं, नये हैं, यहाँ तो सेकेण्ड का सौदा है। एक सेकेण्ड में जन्म सिद्ध अधिकार ले सकते हैं। इसलिए ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करो, यही युक्ति मिलती है। जो भी बात सामने आये तो यह लक्ष्य रखो कि एक सेकेण्ड में बदल जाये। सारे कल्प में यही समय है। अब नहीं तो कब नहीं, यह मन्त्र याद रखना है। जो भी पुराने संस्कार हैं और पुरानी नेचर है वह बदल कर ईश्वरीय बन जाये। कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदतें न रहें। आपके परिवर्तन से अनेक लोग सन्तुष्ट होंगे। सदैव यही कोशिश करनी है कि हमारी चलन द्वारा कोई को भी दुःख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो। यह है ब्राह्मण कुल की रीति। जो दूर से ही कोई समझ ले कि यह हम लोगों से न्यारे हैं। न्यारे और प्यारे रहना— यह है पुरुषार्थ। औरों को भी ऐसा बनाना है। बनना और बनाना - यही लक्ष्य रखना है। जो जितना बनता है उतना बनाता है। अपने जीवन में अलौकिकता भासती है? अपने को देखना कि लोगों से न्यारा अपने को समझते हैं। अगर याद भूल जाते हैं तो बुद्धि कहाँ रहती है? सिर्फ एक तरफ से भूलते हैं तो दूसरे तरफ लगेगी ना। यह अपने को चेक करो कि अव्यक्त स्थिति से नीचे आते हैं तो किस व्यक्त तरफ बुद्धि जाती है? जरूर कुछ रहा हुआ है तब

बुद्धि वहाँ जाती है। कई बातें ऐसी होती हैं जिनको खींचने से खींचा जाता है। कई बातों में ढीला छोड़ना भी खींचना होता है। पतंग को ऊंचा उड़ाने के लिए ढीला छोड़ना पड़ता है। देखा जाता है इस रीति नहीं खींचेंगे तो फिर ढीला छोड़ना चाहिए, जिससे वह स्वयं खींचेंगे। विघ्नों को मिटाने की युक्तियाँ अगर सदैव याद हैं तो पुरुषार्थ में ढीले नहीं होंगे। युक्तियाँ भूल जाते हैं तो पुरुषार्थ भी ढीला हो जाता है। एक एक बात के लिए कितनी युक्तियाँ मिली हैं? प्राप्ति कितनी बड़ी है और रास्ता कितना सरल है। जो अनेक जन्म पुरुषार्थ करने पर भी कोई नहीं पा सकते। वह एक जन्म की भी कुछ घड़ियों में प्राप्त कर रहे हो। इतना नशा रहता है ना! “इच्छा मात्रम् अविद्या” ऐसी अवस्था प्राप्त करने का तरीका बताया। ऐसी ऊंची नॉलेज और कितनी महीन है। जीवन में इतना ऊंचा लक्ष्य कोई रख नहीं सकता कि मैं देवता बन सकता हूँ। यह कब सोचा था कि हम ही देवता थे? सोचा क्या था और बनते क्या हो? बिन मांगे अमूल्य रत्न मिल जाते हैं। ऐसे पद्मापदम भाग्यशाली अपने को समझते हो? प्रेजीडेंट आदि भी आपके आगे क्या हैं? इतनी ऊंची दृष्टि, इतना ऊंचा स्वमान याद रहता है कि कब भूल भी जाते हो? स्मृति-विस्मृति की चढ़ाई उतरते चढ़ते हो? गंदगी से मच्छर आदि प्रगट होते हैं इसलिए उनको हटाया जाता है। वैसे ही अपनी कमजोरी से माया के कीड़े पकड़ लेते हैं। कमजोरी को आने न दो तो माया आयेगी नहीं। सदैव यह याद रखो कि सर्वशक्तिवान के साथ हमारा सम्बन्ध है। फिर कमजोरी क्यों? सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे होते भी माया की शक्ति को खलास नहीं कर सकते। एक बात सदैव याद रखो कि बाप मेरा सर्वशक्तिवान है। हम सभी से श्रेष्ठ सूर्यवंशी हैं। हमारे ऊपर माया कैसे वार कर सकती है। अपना बाप, अपना वंश याद रखेंगे तो माया कुछ भी नहीं कर सकेगी। स्मृति स्वरूप बनना है। इतने जन्म विस्मृति में रहे फिर भी विस्मृति अच्छी लगती है? 63 जन्म विस्मृति में धोखा खाया, अब एक जन्म के लिए धोखे से बचना मुश्किल लगता है? अगर बार-बार कमजोर बनते, चेकिंग नहीं रखते तो फिर उनकी नेचर ही कमजोर बन जाती है। अवस्था चेक कर अपने को ताकतवर बनाना है, कमजोरी को बदल शक्ति लानी है।

**वरदान:- ब्राह्मण जीवन में खुशी के वरदान को सदा कायम रखने वाले महान आत्मा भव**

ब्राह्मण जीवन में खुशी ही जन्म सिद्ध अधिकार है, सदा खुश रहना ही महानता है। जो इस खुशी के वरदान को कायम रखते हैं वही महान हैं। तो खुशी को कभी खोना नहीं। समस्या तो आयेगी और जायेगी लेकिन खुशी नहीं जाये क्योंकि समस्या, पर-स्थिति है, दूसरे के तरफ से आई है, वह तो आयेगी, जायेगी। खुशी अपनी चीज़ है, अपनी चीज़ को सदा साथ रखते हैं इसलिए चाहे शरीर भी चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। खुशी से शरीर भी जायेगा तो बढ़िया और नया मिलेगा।

**स्लोगन:-**

बापदादा के दिल की मुबारक लेनी है तो अनेक बातों को  
न देख अथक सेवा पर उपस्थित रहो।